Dr. Seema Kumari
Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC, VKSU.
Date - 13.01.2022
BA-I, Comparative Politics. Paper 2.



## तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागम

~~1. व्यवस्था सिद्धांत~~ -

उपागम (Approach) को अनेक नामों से भी जाना जाता है जैसे दृष्टिकोण, परिप्रेक्ष्य, दृष्टिबिन्दु इत्यादि आदि। इसकी धारणा बहुत सरल है प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी उपागम से काम लेता है यह मनुष्य की मन बुद्धि आंख की तरह है। राजनीति जगत की वस्तुएं भी सामाजिक परिवेश में घुली मिली रहती हैं उपागम में राजविज्ञानी अपने विषय क्षेत्र को एक क्रमबद्ध स्थिति एंव विशेष परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। वह उस क्षेत्र की कुछ प्रमुख समस्याओं एंव प्रश्नों का विवरण प्रस्तुत करता है। उपागम किसी विषय विशेष के संबंध में एक मानसिक संगठन है जो अपने अवधारणात्मक पदानुक्रम को 1. सीमा निर्धारण

2. महत्वपूर्ण परिवर्त्यों या चरों के केंद्रीकरण 3. समस्याओं की प्राथमिकता के निर्धारण तथा 4. ~~परि~~कल्पनाओं के सृजन द्वारा प्रस्तुत करता है। इससे विद्वानों में सुगम अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण या वैचारिक आदान प्रदान के लिए शब्दों, अर्थों, अवधारणाओं, संवर्गों, व्याख्या प्रतिमानों आदि की रचना होती है। उपागमों ने विभिन्न प्रकारणाओं

Scanned with CamScanner

जांच सूचियों आदि का निर्माण किया है इससे विश्लेषण में एक जागरूकता का भाव उत्पन्न हो जाता है। व्यापक सिद्धांतों के साथ तुलना करने पर प्रतीत होगा कि उपागम नवीन समस्याओं नए मापदंडों, तथ्यों आदि को शोध के साथ संयुक्त करके अधिक उपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध हुए हैं ये निष्कर्षों की विशुद्धता और प्रामाणिकता को बढ़ाने में सहायक रहे हैं।

प्रमुख उपागम –

1. व्यवस्था सिद्धांत - डेविड ईस्टन
2. संरचनात्मक प्रकार्यवादी उपागम
3. समूहवादी मॉडल
4. परिमाणात्मक मॉडल

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के अन्य उपागम हैं:-

- संचार सिद्धांत
- क्रीड़ा एवं विनिश्चय सिद्धांत - इसके अनेक रूप विनिमय सिद्धांत, सौदाकारी सिद्धांत आदि हैं।
- मनोविज्ञानात्मक सिद्धांत
- अभिजन सिद्धांत
- आधुनिकीकरण एवं विकास सिद्धांत हैं।

इन उपागमों के कारण तुलनात्मक राजनीति का स्वरूप ही बदल गया है। अब इसका क्षेत्र तुलनात्मक, आनुभाविक, विश्लेषणात्मक तथा अंततः अनुशासनात्मक हो गया है। उनका विकासशील देशों की ओर विशेष ध्यान गया है।

→

Scanned with CamScanner